जयपुर-राजापार्क। 'शिव दर्शन आध्यात्मिक मेले' का उद्घाटन करते हुए खान एवं वन पर्यावरण विभाग मंत्री राजकुमार रिणवा, महिला कल्याण विभाग मंत्री अनीता भदेल, ब्र.कु. पूनम व अन्य।

चंडीगढ़। विश्वविख्यात एथलीट मिल्खा सिंह को स्पोर्ट्स विंग की गतिविधियों से अवगत कराने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. दीपक। साथ हैं ब्र.कु. पूनम व ब्र.कु. सीमा।

तपा-पंजाब। प्रवीन कुमार,ए.डी.ई. को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. ऊषा, ब्र.कु. डॉ. लेखराज व अन्य।

शिव जयन्ती की हार्दिक बधाइयाँ
महाशिवरात्रि महोत्सव

चित्तौड़गढ़-राज.। बेगु सेवाकेन्द्र में महाशिवरात्रि पर ध्वजारोहण के पश्चात् जमुनालाल लकी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. आशा व ब्र.कु. लक्ष्मी। कार्यक्रम में शरीक हुए तहसीलदार भूपेन्द्र वर्मा, सी.आई. भवानी सिंह, जेल निरीक्षक करण सिंह, ब्लॉक शिक्षा अधिकारी विनोद रातडीया, गोपाल सोनी, पारस जैन व अन्य गणमान्य जन।

मधुबन-मऊ(उ.प्र.)। शोभा यात्रा का शुभारंभ करने के बाद विधायक उमेश चन्द्र पाण्डेय को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. विमला।

रावर्ट्सगंज-उ.प्र.। आध्यात्मिक ज्ञानचर्चा के पश्चात् चित्र में जिला न्यायाधीश धर्मवीर सिंह, ब्र.कु. सुमन, ब्र.कु. प्रतिभा व अन्य।

महावीर जब नाम सुनावे...

- ब्र.कु. दिलीप,शांतिवन

भूत पिशाच निकट नहि आवे।
महावीर जब नाम सुनावे।।
हनुमान, अर्थात् जिसने अपने मान का हनन कर लिया हो। जो कुछ है, प्रभु अर्पण है। उसके लिए जीना, उसी के लिए मरना। इसलिए कलियुग में राम, सीता, लक्ष्मण के साथ हनुमान को नतमस्तक दिखाया गया। हम जो हनुमान जी की भक्ति करते हैं, हमें भी तो उनकी ही तरह अपने मान का हनन कर, परमात्मा राम के कदम पर चलना होगा।

कलियुग के सबसे शक्तिशाली, पराक्रमी और सबके दु:खहर्ता के रूप में यदि कोई प्रसिद्ध है तो वे हैं हनुमान जी, या फिर सिद्धि विनायक गणेश जी। कहा भी जाता है जिस गांव की सरहद पर या फिर गांव या शहर या कस्बे में एक हनुमान व गणेश का मंदिर हो, तो वहाँ परिस्थितियाँ हमारे अनुकूल रहती हैं। सब कुछ हमारे हिसाब से चलता है।

थोड़ा हम समझते हैं:– क्या हैं हनुमान जी ? कैसे इनकी रचना हुई होगी ? क्या ये वही रामभक्त हनुमान जी हैं, या फिर कोई और ? चलिए चाहे जो भी हो, उन्हें बस हमें समझना है। सभी भक्त गणों से एक विनती भी है हमारी, हमारा ध्येय आप सबकी भावनाओं को ठेस पहुंचाने का नहीं है, लेकिन आपको अपने इष्ट हनुमान जी से प्राप्ति और अधिक कैसे हो, उसका रहस्य बताने की है। ऐसा इसलिए कि आप, या हम सभी कभी भी हनुमान जी के स्वरूपों या सीधे शब्दों में बंदर से इतने डरते हैं, उनके उछल-कूद से परेशान होते हैं, फिर एक ऐसा उसमें कैसे निकला, जिसको सभी ने अपना इष्ट बना लिया!

वैज्ञानिक समीकरण क्या कहते हैं?

वैज्ञानिकों का मानना है कि बंदर प्रजाति में दायाँ भाग जो भावनात्मक होता है, वही काम करता है, उसका बायाँ भाग जो तार्किक या लॉजिकल होता है, वह बिल्कुल भी कार्य नहीं करता है। इसलिए बंदर पकड़ने वाले भी वही युक्ति अपनाते हैं। घड़े में चले डाल देते, बंदर मुट्ठी बंद कर उसे पकड़ लेता, और उसका हाथ घड़े में घुस तो जाता, लेकिन मुट्ठी बंद होने के कारण बाहर नहीं निकालता। बंदर चने छोड़ना नहीं चाहता, जिससे वह जाल में फंस जाता है। हम सभी भी इसी मनोदशा के शिकार हैं वर्तमान समय। हमारे में या तो कोई बहुत तार्किक हैं या कोई बहुत भावनात्मक। बैलेंस ना होने के कारण हम भी फंस पड़े हैं।

आध्यात्मिक समीकरण:– इस दुनिया में जितनी भी मूर्तियाँ बनी हैं, वो किसी ना किसी भाव को समेट कर चली हैं। नहीं तो आप ही ज़रा सोचें कि मनुष्य के धड़ पर हाथी का सिर, या फिर बंदर मुख वाले को इष्ट की उपाधि, कुछ तो रहस्य होगा ना! आज की दुनिया में, कौन ऐसा है जो इसको अपनायेगा, यदि कोई बच्चा ऐसा पैदा हो जाए, तो लोग उसे स्वीकार नहीं करते, लेकिन सभी देवताओं को हमने स्वीकार किया हुआ है, है ना ऐसा!

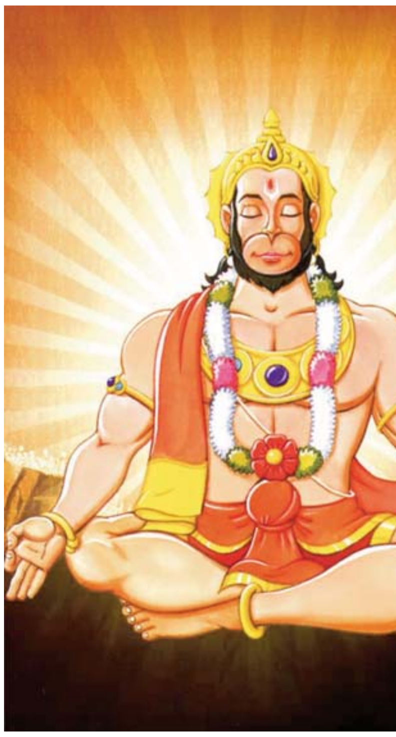

चंचल प्रवृत्ति वाले इंसानों की उपाधि वाले ही दरअसल बंदर हैं। वैसे भी कहा जाता है कि बंद हो जिसका दर (बंद+दर) बंद हो जिसका दरवाज़ा वही बंदर है। इसलिए रामायण की एक घटना में यह दिखाया गया, जब हनुमान जी पैदा हुए तो उनके पास असीम शक्ति थी। उसके कारण वे अपनी शक्ति के बल पर ऋषियों, मुनियों को यज्ञ में विघ्न डालते रहते, उन्हें तंग करते, उनकी आराधना में अड़चन डालते। जिसके कारण ऋर्षियों ने उन्हें श्राप दिया कि आपको जब तक कोई याद नहीं दिलायेगा तब तक आपकी शक्तियाँ आपको याद नहीं आयेंगी। दरअसल यह आज की मनोदशा का ही तो वर्णन है, आज बुद्धि का दरवाज़ा बंद होने के कारण मनुष्य गलत व सही का फर्क नहीं समझ पाता और गलतियों पर गलतियाँ करता ही जाता।

सामाजिक पहलू:– समाज में अक्सर उसे पसंद करते हैं, जो मिलनसार हो, जिसे आपसी समझ हो। लेकिन हनुमान जी को तो बिल्कुल ही अलग, राम की भक्ति में तल्लीन दिखाया गया। शक्तियों को याद दिलाने के लिए राम की ज़रूरत पड़ती थी। सामाजिक होने के लिए सभी गुण, सभी को समझने का भी गुण होना चाहिए। और यह गुण हमारे में तब तक नहीं आ सकता जब तक हम भगवान के सानिध्य में रह उनके गुण धारण ना करें। यहाँ राम भगवान का एक नाम है जिसकी याद से उन्हें सिद्धियाँ मिलीं। इशारे को समझने का अनुपम उदाहरण हनुमान जी।

अन्याअन्य पहलू:– हनुमान, अर्थात् जिसने अपने मान का हनन कर लिया हो। जो कुछ है, प्रभु अर्पण है। उसके लिए जीना, उसी के लिए मरना। इसलिए कलियुग में राम, सीता, लक्ष्मण के साथ हनुमान को नतमस्तक दिखाया गया। हम जो हनुमान जी की भक्ति करते हैं, हमें भी तो उनकी ही तरह अपने मान का हनन कर, परमात्मा राम के कदम पर चलना होगा।

भगवान अपने भक्तों को जगह तभी देता है जब वह समर्पित हो जाये। समर्पण का एक उदाहरण हैं हनुमान जी। शक्तिशाली या महावीर शायद वे इसीलिए ही थे कि उनका कुछ भी अपना नहीं, जो कुछ है, वो परमात्मा का। हनुमान जी को रंगों में भी गेरुआ या लाल रंग में रंगा दिखाया गया। गेरुआ पवित्रता और लाल रंग भक्ति का प्रतीक है।

कुल मिलाकर सारांश यह है कि हनुमान जी प्रतीकात्मक हैं। जिन्होंने पवित्रता व शक्तियों को धारण किया, उनके पास भूत-पिशाच आदि बिल्कुल भटक नहीं सकते। यहाँ भूत का आशय (विकारों) के साथ है। काम-क्रोध, जैसे भूत उनके सामने नहीं आ सकते और राम को समझने की सारी विधि भी उनके पास आ जाती है। इसलिए कहते हैं कि यदि तुम चालीस दिन लगातार इन शक्तियों वा गुणों की प्रैक्टिस करो तो हनुमान या महावीर बन जाएंगे। राम-रसायन अर्थात् राम अर्थात् भगवान को समझने की केमेस्ट्री हमें प्राप्त हो जायेगी।

फरीदाबाद। आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् विधान सभा के विधायक नगेन्द्र बढ़ाना को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. कौशल्या।

कुण्ड-रेवाड़ी। बी.एम.जी. मॉल के मालिक रिपू दमन गुप्ता को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र प्रभारी ब्र.कु. रेनू।

नौबस्ता-कानपुर(उ.प्र.)। शिवरात्रि के कार्यक्रम के दौरान सभासद मनोज गुप्ता को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका व ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शिवानी।